ये अव्यक्त इशारे

सत्यता और सभ्यता रूपी कल्चर को अपनाओ

25-03-2025

सत्यता की परख है संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध सम्पर्क सबमें दिव्यता की अनुभूति होना। कोई कहते हैं मैं तो सदा सच बोलता हूँ लेकिन बोल वा कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा इसलिए सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा।

Adopt the culture of truth and good manners

To discern purity is to experience divinity in your thoughts, words, actions, relationships and connections. Some say: "I always speak the truth", but if there isn't any divinity in their words and actions, others will not feel anything true in their truth. Therefore, imbibe divinity with the power of truth. No matter what you have to tolerate, do not be afraid. Truth will automatically be revealed according to the time.